

पद १७५

(राग: बिहाग - ताल: गजल ठेका लंगडी.)

इस इश्क में कोई दम को आराम नहीं देखा तादम-बदम ओ
शक्ल, दिल आराम नही देखा ॥१॥ बदनाम हो बेदिल बेशरां,
बेशक हो बुतपरस्त। इसपर भी हक बोला सो बदन को दार पर
देखा ॥२॥ आशिक हो बेदर्द के इश्क आशिक से गाफिल।
आशिक को किसी माशूक से हुशियार नहीं देखा ॥३॥ शब हो
तो ऐसी हो के हमवस्ल हो माहरू। उस ख्वाब से किसी आशिक
को बेदार नहीं देखा ॥४॥ खुदी से ही खुदा कहते हैं मगर खुदा है
खुदी से दूर। लेकीन सिवा खुदी के खुदा खुद को नही देखा ॥५॥
कहना वो बेजबां का समझना वो बेकयास। अपने में आप समझा

सो तो फिर खामोश नहीं देखा ॥६॥ जो चश्म पुर आब से ओ नूर
देखते हैं मजनू। तब गोहरे लैला के सिवा कुछ नही देखा ॥७॥
क्या पाकरूह बेआइना माशूक को मजा दे। यह रम्ज़ महंमदी
को खुद अहमदी ने देखा ॥८॥ नामुरीद न हो मुरशद बेमुरशद न
हो मुरीद। इस बंदे मानिक ने कभी जुदा नहीं देखा ॥९॥